तात्पर्य

सम्पूर्ण ज्ञान का परम गोपनीय सार बस यही है कि भगवान् श्रीकृष्ण का शुद्धभक्त बन कर नित्य-निरन्तर उनके नाम, रूप, लीला, धाम के चिन्तन में तन्मय रहे और उन्हीं की प्रीति के लिए कर्म के परायण हो। कपटध्यानी बनने से कुछ लाभ नहीं होगा। जीवन को इस प्रकार ढाल लेना चाहिए कि नित्य-निरन्तर श्रीकृष्ण का स्मरण होता रहे। यही नहीं, कर्म सदा उस विधि से करना चाहिए कि सारी दैनन्दिन क्रियाएँ श्रीकृष्ण से सम्बन्धित हों। जीवन में ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि दिन में चौबीस घण्टे श्रीकृष्ण के अतिरिक्त अन्य कुछ चिन्तन संभव ही न रहे। श्रीभगवान् की प्रतिज्ञा है इस प्रकार का शुद्ध कृष्णभावनापरायण पुरुष निःसन्देह उन (श्रीकृष्ण) के धाम को फिर प्राप्त हो जायगा, जहाँ उसे साक्षात् श्रीकृष्ण का शाश्वत् संग रहेगा। अर्जुन के लिए इस परम गोपनीय ज्ञान को इसीलिए कहा गया कि वह श्रीकृष्ण का अतिशय प्रिय सखा है। जो कोई अर्जुन के चरणचिन्हों का अनुसरण करेगा, वह श्रीकृष्ण का प्रिय सखा बनकर अर्जुन के ही समान कृतार्थ हो जायगा।

मन्मनाः भव—श्रीकृष्ण के उसी श्यामसुन्दररूप में मन को बसाए रखना चाहिए, जो द्विभुज वेणुधारी, सान्द्रांग घनश्याम, सुस्निग्धकुञ्चित कुन्तल, सुन्दर भ्रूवल्लि, मधुरकृपाकटाक्ष, अमृतवर्षिवदनचन्द्र तथा केशराजि में मयूरपिच्छधारी है। श्रीकृष्ण के रूप का यह हृदयहारी वर्णन ब्रह्मसंहिता आदि शास्त्रों में है। भगवान् श्रीकृष्ण के इस आदिरूप में ही मन को एकाग्र कर दे, उनके अन्य रूपों में भी ध्यान को नहीं भटकाना चाहिए। श्रीभगवान् के विष्णु, राम, नारायण, वराह आदि नाना रूप हैं; परन्तु भक्त को अपना चित्त उसी रूप में निवेशित करना चाहिए, जो अर्जुन के सामने प्रत्यक्ष है। श्रीकृष्ण में मन का तन्मय हो जाना ज्ञान का परम गोपनीय सार है। यह अर्जुन के प्रति प्रकट किया गया, क्योंकि अर्जुन श्रीकृष्ण का परम प्रेमास्पद सखा है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।६६।।

सर्वधर्मान्=सब प्रकार के धर्मों को; **परित्यज्य**=त्याग कर; **माम् एकम्**=एक मेरी ही; **शरणम्**=शरण में; **व्रज**=आ जा; **अहम्**=मैं; **त्वा**=तुझको; **सर्वपापेभ्यः**=सम्पूर्ण पापों से; **मोक्षयिष्यामि**=मुक्त कर दूँगा; **मा शुचः**=तू शोक मत कर।

अनुवाद

सब प्रकार के धर्मों को त्याग कर एकमात्र मेरी शरण में आ जा। मैं तेरा सम्पूर्ण पापों से उद्धार कर दूँगा, तू शोक मत कर।।६६।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् ने नाना प्रकार के ज्ञान का, धर्म-पद्धतियों का, परब्रह्म के ज्ञान का, परमात्मा के ज्ञान का, विविध वर्ण और आश्रमों का, संन्यास का, वैराग्य (अनासक्ति), शम, दम, ध्यान आदि के तत्त्व का वर्णन किया है। अब, गीताशास्त्र का उपसंहार करते हुए श्रीभगवान् कहते हैं कि अर्जुन पूर्ववर्णित सम्पूर्ण पद्धतियों को त्याग